ॐ

परमपिता परमात्मा समर्थ सद्गुरु

श्री श्री भवानीशंकर जी

(श्री श्री बच्चा जी महाराज)

जन्मशती-समारोह

स्मारिका

(२)

संरक्षक :

परमसंत श्री कृष्णदयाल जी

प्रकाशक :

विवेकानन्द

859, पुराना कटरा, इलाहाबाद

नमस्कार

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय,
नमस्ते चिते सर्व लोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैत–तत्वाय मुक्ति प्रदाय,
नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥

हे जगत् के कारणरूप और सत्स्वरूप परमेश्वर! तुझे नमस्कार!
सारे विश्व के आधार रूप हे चेतन्य! तुझे नमस्कार।
मुक्ति देने वाले हे अद्वैततत्व। तुझे नमस्कार।
हे शाश्वत और सर्वव्यापी ब्रह्म। तुझे नमस्कार।

परमसंत समर्थ सद्गुरु महात्मा
श्री श्री भवानी शंकर जी (श्री श्री चच्चाजी महाराज)

सद्गुरु–स्तवन

श्री विकास (श्री बाल कृष्ण शर्मा)

श्री के न साधक थे वे अहिंसा के पुजारी,
सदा सदाचारी देह देव तुल्य धारती।
हरि की लुनाई और सिंधु गहराई जहां,
संत की निकाई पै बलैयां लेय भारती।
अधम उधारिबे को व्यस्त काज के संवारिबे को,
जिनके सौम्य मुख पै सदा शान्ति थी बिराजती।
पुरुष पुरातन की महिमा बखाने कौन,
आओ गुरुदेव की उतारें आज आरती ॥

सुमन सराहन जोग, महिमा बखानन जोग,
महकत चदरिया जिनकी अतर गुलाब सी।
राम राम जिनके रहा रोम रोम आत्मसात्,
वाणी थी जिनकी मंजु विमल प्रताप सी।
रहते गेह में थे किन्तु देह-गेह तृणवत् था,
सहज था वेष न बनाया ठाठ राज सी।
ऐसे गुरुदेव की महिमा बखाने कौन,
जिनके पादपद्मों में निछावर थी राजश्री।
आओ गुरुदेव की उतारें आज आरती ॥

संत थे सब के पर विशेषकर असंतन के,
निर्बल के बल थे किन्तु बल के भी राम थे।
भक्तों की भक्ति तथा ज्ञानियों के ज्ञानोदय,
सुकृति जनों की आप कीरति ललाम थे।
सहज अपावन को पावन कर देते प्रभु,
मुझ पातकी के आप एक पुण्य धाम थे।
माता पिता बन्धु और सुहृद जनों के सखा,
भाग्यवान भक्तों के 'विकास' श्यामा श्याम थे।
पुरुष पुरातन की महिमा बखाने कौन,
आओ गुरुदेव की उतारें आज आरती ॥

प्रकाशकीय-

—परम पिता परमात्मा समर्थ सद्गुरु श्री श्री चच्चा जी महाराज की जन्म शती समारोह स्मारिका के लिये प्रचुर सामग्री भाव व प्रेम पूर्वक प्राप्त हुई। सम्पूर्ण सामग्री का प्रकाशित करना समयाभाव के कारण संभव न था। स्मारिका समारोह के शुभ दिन ११-११-९८ को विमोचित होनी थी। अतएव प्रथम खण्ड में अधिक से अधिक सामग्री प्रकाशित की गई। प्रकाशन का कलेवर बड़ा हो गया। पृष्ठ संख्या ३०० से ऊपर पहुँच गई। लगभग ३२-४० पृष्ठ की सामग्री भाग २ के लिए छोड़नी पड़ी जो अनुगामी प्रकाशन के रूप में यथा समय भविष्य में मुद्रित हो।

—फिर भी एक लालसा लगी रही कि यदि यह सामग्री भी इसी समय उपलब्ध हो जाती तो बड़ा अच्छा होता। आर० एस० प्रिंटिंग प्रेस रामनगर, उरई ने ४-५ दिन की अल्प अवधि में इस कार्य को पूरा करने का उत्साह दिखलाया तथा पूरा करके भाग २ उपलब्ध कराया। आर० एस० प्रिंटिंग प्रेस के परिवार प्रमुख श्री चन्द्रकृष्ण खरे श्री श्री चच्चा जी के प्रिय प्रेमी जन हैं। उनको श्री श्री गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त हो, यही प्रार्थना है। वह धन्यवाद और साधुवाद के पात्र तो हैं ही।

यों अल्प-अवधि के अविलम्ब प्रकाशन में प्रिंटिंग साज-सज्जा की अपेक्षा का एक दो जगह रह जाना स्वभाविक है। इसके लिए हमें हार्दिक खेद है।

इतनी अल्प अवधि में मुद्रण एवं प्रकाशन पूरा कर लेना एक चमत्कार है। श्री श्री चच्चा जी की कृपा आखिर इस रूप में यहां भी उजागर हो ही गई।

मैं कहता न था, सम्भलिए यूं ना मुझको देखिए
मुस्कराना आपका सबकी नजर में आ ही गया।

—विवेकानन्द

अनुक्रमणिका

संपादक—

प्रमुख संपादक—
डा० कृष्ण जी डी० लिट्

प्रबन्ध संपादक—
डा० स्वामी जी

संपादक मण्डल—
डा० कृष्ण जी
डा० स्वामी जी
डा० सत्यप्रकाश
डा० के० बी० लाल
श्री जगदीश मिश्र

प्रकाशक—
श्री विवेकानन्द
८५९, पुराना कटरा, इलाहाबाद
सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक—
आर० एस० प्रिन्टर्स, उरई

एक मात्र वितरक—
१००८, पुराना कटरा
इलाहाबाद

सहयोग रूप भेंट—
दोनों भाग मात्र २०/-

नमस्कार एवं गुरु स्तवन	१
प्रकाशकीय—	३
अनुक्रमणिका—	४
अबचित चेति चित्रकूटहि चल—	५
गुरु में गोपाल—	७
संतत करहिं प्रनत पर प्रीती—	९
अध्यात्मिक संप्रेषण—	१२
कर सरोज सिर परसेउ	
बिगत भई सब पीर—	१४
गुरु व्यापक सर्वत्र समाना—	१६
राम सदा सेवक रुचि राखी—	१८
परम पूज्य चच्चा जी महाराज—	२१
प्रभु मूरत तिन तैसी देखी—	२३
माता पिता के चरण स्पर्श	
की शिक्षा—	२६
गृहस्थ संत—	२७
जय जय भवानी शंकर—	२८
जगदम्बा अवतार—	३०
इति श्री शंकर स्मारिका—	३२

" अब चित चेति चित्रकूटहि चल "

(श्री श्री चच्चा जी के साथ चित्रकूट यात्रा)

(श्री कृष्णकुमार श्रीवास्तव)

श्री मान चच्चा जी द्वारा ८-१२-४९ तिथि को पावन तीर्थ चित्र कूट धाम चलने की सूचना सब शिष्य गणों को देदी गई थी, अतः सब स्थानों तथा झांसी के सत्संगी ७-१२-४९ तक एकत्रित हो गये। लगभग ७०० आबालवृद्ध हो गये थे। स्टेशन से पहले से रिजर्व्ड बोगी में सब यात्रियों को सवार होना था। यह बोगी भी भक्तों ने फूल मालाओं से सजा दी थी। चच्चा जी ने बाल बच्चों सहित सब की गणना की। "जय गुरुदेव" का उच्चारण करते हुये पहले चच्चा जी ने बोगी में प्रवेश किया, फिर सब लोग सवार हुये। श्री सीता प्रसाद जी के दामाद डा० ओम बाबू अपनी दवाइयों का किट लिये साथ थे।

मार्ग में सत्संग ही होता गया। चित्र कूट में भरत मिलाप सम्बन्धी चौपाइयां गुरु देव के मुखार विंदु से उच्चरित होती रहीं। करवी की यात्रा लम्बी थी, इस लिये सब लोग आराम करते हुये चलते रहे। मुझे कभी कभी ऐसा प्रतीत हुआ जैसे भवसागर से पार होने वाली नौका में एक कुशल खेवन हार के साथ जा रहे हैं।

मैं सदा चच्चा जी के निकट रहता था, क्यों कि बहुधा पहले से ही मेरा सत्संग यही होता था कि गुरु देव आराम आसन में हों तो मैं चरण चांप करता रहूँ।

करवी स्टेशन पर हम सब गुरु देव के पीछे जय जय श्रीराम, जय श्री गुरु देव के नारों सहित प्लेट फार्म पर उतरे। पैदल ही सब लोग चित्र कूट धाम के जब निकट पहुँचे तो बैठकर सत्संग हुआ। श्रद्धालुओं ने उस भक्त स्थली की धूलि माथे से लगाई।

चित्र कूट में एक अच्छी धर्मशाला का प्रबन्ध पहले ही से किया हुआ था। श्री प्रेमनारायण श्रीवास्तव महरौनी वाले करवी के तहसीलदार थे, उन्होंने सब प्रबन्ध कर रखा था। सब लोग अपना अपना सामान साथ रखते थे।

धर्मशाला पहुँच कर सब ने प्रबन्धकर्ताओं के निर्देशानुसार स्थान ग्रहण कर लिये। धर्मशाला के द्वार पर परम संत का सत्संग दिनाँक २२ तक लिखा हुआ लगा था। धर्मशाला में ही सब के भोजन आदि का प्रबन्ध था।

प्रातः उठकर प्रतिदिन की क्रियाओं से निवृत्त होकर हम सब सत्संग करते तत्पश्चात मंदाकनी में स्नान करते। भोजन को सब लोग एक साथ बैठते, गुरु देव भोग लगाते और जय श्री गुरु देव का नाम लेते हुये भोजन करते।

कुछ विश्राम करके किसी न किसी प्रमुख स्थान पर गुरु देव ले चलते, उस स्थान पर अच्छी तरह ध्यान सत्संग होता। ध्यान के पूर्व गुरु देव उस स्थान की महिमा बताते और उस स्थान सम्बन्धी रामायण की चौपाइयां कहते।

कामतानाथ की परिक्रमा की। जहां कहीं भी जाते मार्ग में गुरु देव बैठकर सब को सत्संग कराते। जहां बैठते, भक्त जन गुरु देव की आरती करते।

किसी को अकेले मंदिर जाने की आज्ञा नहीं थी। गुरु देव के साथ ही मंदिरों में गये और गुरु रूप में दर्शन किये। एक दिन गुप्त गोदावरी गये वहाँ पर सबने स्नान किया और ध्यान सत्संग किया।

सती अनसुइया के स्थान जाने के लिये उस समय बड़ा कठिन मार्ग था। परन्तु छोटे बच्चे भी उस मार्ग पर होकर चले गये। गुरु कृपा से कोई कष्ट नहीं हुआ। फटिक शिला देखी और उसके आगे वह स्थान भी देखा जहां से मंदाकिनी प्रारंभ होती पतली धार मोड़दार बरसात के बहने वाले पौरे की तरह। घनघोर वन था वहां सब स्थानों पर ध्यान कीर्तन हुआ। "ॐ शान्ति" का जाप भी हुआ। सब जगह गुरु देव की आरती होती थी। उस समय चारों ओर अद्भुत आनन्द का वातावरण दिखलाई देता था।

मैं तो प्रति दिन सायं को गुरु देव को चरण चाप सेवा करता था। एक दिन गुरु देव ने तीर्थ स्थलों की महिमा में यह वचन कहा— "तीर्थों पर महान भक्तगण आते हैं जिनकी चरणरज से वह स्थल अति पावन हो जाता है। यही तीर्थ स्थल की सब से बड़ी महिमा है।"

पद के प्रति उदासीनता—
महात्मा गांधी कहते थे कुर्सी को lightly पकड़ें, tightly नहीं।

गुरु मैं गोपाल

[कृष्ण कुमार श्रीवास्तव]

[भगवान श्री कृष्ण को अर्जुन जैसा शिष्य मिला तो उन्होंने उससे कहा, "मैं भगवान हूँ। तू मेरी शरण में आ। इसी प्रकार श्री चच्चाजी भगवान को कृष्ण कुमार जैसे अर्जुन मिले तो उन्होंने अपने आप को प्रकट किया, कि मैं ही परब्रह्म हूँ। मुझ में गोपाल के दर्शन कर।]

श्री श्री चच्चा जी की शरण में आने से पूर्व मैं श्री कृष्ण मंत्र का जाप और ध्यान करता था। श्री श्री चच्चा जी की बताई पूजा व ध्यान करते समय श्री श्री चच्चा जी के स्थान में श्री कृष्ण जी का ध्यान व पूजा होने लगती थी। इस प्रकार बड़ी दुविधा में पड़ जाता था। यह दुविधा मैंने श्री श्री चच्चा जी महाराज को बताई तो उहोंने यह कहाकि समय पर दूर करे गे।

चित्रकूट में मैंने याद दिलाई तो श्री श्री चच्चा जी महाराज ने कहा कि कल प्रातः ७ बजे शौच आदि से निवृत्त होकर सत्संग से पहिले मेरे साथ चलना। दूसरे दिन प्रातः ३ बजे भक्तों को छोड़कर श्री श्री चच्चा जी केवल मुझे लेकर चले मंदाकिनी की ओर। एक छोटी दुकान से दो टोपियाँ और दो रूमाल खरिदवाये। मंदाकिनी के घाट पर पहुँच कर चच्चा जी ने व मैंने आज्ञानुसार हाथ पांव अच्छी तरह धोये, फिर घाटों के किनारे किनारे चले। घाटों की दीवालें थोड़ी चौड़ी हैं जिन पर होकर एक आदमी चल सकता है और नदी के गहरे पानी में चलकर गोलाकार कुछ चौड़े व्यास की गुम्बजें सी हैं।

बस उसी चपटी गोल गुम्बज पर चच्चा जी ने आसन लगाया सामने मुझे बैठाया, उस समय का दृश्य बड़ा मनोहर था, प्रकृति शान्त थी, रवि रश्मियां मंदाकिनी लहरियों में पड़ रही थी, नीचे बहुत नीचे कुछ लोग स्नान कर रहे थे। आकाश में पक्षी उड़ रहे थे। सामने बैठते ही विचार शून्यता सी हो गई – एक टोपी मेरे सिर पर लगाई, एक टोपी अपने सिर पर रखी, दोनों रूमालों में गाठें लगाकर दूसरे सिरे परस्पर जंघाओं पर रखे।

अब अपना हाथ बढाकर मेरा हाथ अपने हाथ में लिया और जय गुरुदेव कहते ही उनका मुख मंडल लालवर्ण हो गया, फिर ये वचन मुझसे

कहलवाये —" मैं कृष्ण कुमार अपना हाथ श्रीकृष्ण रूपी भवानीशंकर के हाथ में देता हूँ। जो एक हैं, अखण्ड हैं, परब्रह्म हैं, न वे खाते हैं, न पीते हैं, उनके न बच्चे है, न घर-द्वार है। मैं अब ब्रह्म को खण्ड—खण्ड नहीं देखूगा [बस यह मेरे द्वारा कहलाये जाते ही उनके सिर की टोपी मोर मुकुट सी प्रतीत हुई बस, यही दर्शन होता रहा।] फिर उन्होंने कहलाया "मैं स्वयं तरने का प्रयत्न करूंगा अपनी मां को तारूंगा अपने पिता को तारूंगा। मैं अपने पूर्वजों को तारूंगा, मैं अपनी स्त्री संतान को तारूंगा।" इन बचनों के बाद जय श्री गुरु-देव, ॐ गुरुदेव कहते वे शान्त रहे, बस मैं यही शान्त भाव देखता , पहले भूला सा रहा – धीरे-धीरे मेरी चेतना लौटी, आज्ञा हुई यह टोपी रूमाल सदा रखना।

फिर हम धर्मशाला लौटे तो ऐसा लगा आगे भगवान गुरु गोपाल जा रहे हैं, बस यही हैं, सब कुछ। यही भावना बनी रही, फिर रास्तों में कहीं बैठते , आरती होती, बस मुझे यही लगता था मैंने पा लिया भगवान को यही दशा व भावना बनी रही। आनन्द प्राप्त हुआ।

धर्म और राजनीति

धर्म दीर्घकालीन राजनीति है और राजनीति अल्पकालीन धर्म। धर्म का काम है अच्छा करे और उसकी स्तुति करे। राजनीति का काम है बुराई से लड़े और उसकी निंदा करे।

— राम मनोहर लोहिया

संतत करहिं प्रनत पर प्रीती

श्री रामस्वरूप सक्सेना
(खरगजीत नगर मैनपुरी)

मैं सर्व शक्तिवान, परम पिता, पूज्य चच्चा जी महाराज की शरण में, अक्टूबर १९५० में, झांसी में मुहल्ला खतराना में पहुँचा। जब उन्होंने अपनी शरण में ले लिया और पूजा दे दी, उसके पश्चात उन्होंने बड़े प्रेम से और गद्‌गद् कंठ से कहा था कि आज से तुम्हारे जीवन का भार हमारे ऊपर है। तुम अपनी पढ़ाई करते रहो। सब हम देखेंगे। उसके पश्चात बराबर शीर्ष शिक्षा से भरे चच्चा जी महाराज के पत्र आते रहते थे।

हर पत्र में वह हमारे लिये सदाचार पर बहुत जोर देते थे। जब हम फरवरी १९५१ में पूज्य चच्चा जी महाराज के दर्शन करने हेतु झांसी गये तो उन्होंने इतना अद्‌भुत प्रेम तथा कृपा दिखाई और हंस-हंस कर शिक्षायें दी। वह वैसी ही अब तक गूंज रही है। हमने एक गीता का श्लोक उनको सुनाया और पूछा, महाराज जी इसका अर्थ हमारी समझ में ठीक से नहीं आता। तो उन्होंने हंसकर अति भाव विह्वल होकर कहा कि देखो जिन ऋषि मुनियों ने या महान् संतों ने बड़े बड़े सद्‌ग्रन्थ लिखे है, उन्होंने पहिले तपस्या की है सदाचार से रहकर भक्ति एवं अभ्यास किया है। इसके बाद उन्होंने आत्मिक या अध्यात्मिक शक्ति प्राप्त की, तब यह सद्‌ग्रन्थ लिखे हैं। इसलिये पहले अभ्यास करो इसके पश्चात् इन सद्‌ग्रन्थों को पढ़ो। उस समय अपने आप सही अर्थों में गीता या रामायण आ जावेगी। बार-बार यही अमृत वचन कहते थे कि निश्चित समय पर निश्चित् समय तक हर हालत में पूजा करनी है।

जब हम लखनऊ विश्वविद्यालय में पढ़ रहे थे, उस समय हमारी माँ हमारे पास रहती थीं। वह बीमार चल रही थीं। तो एक दिन जाड़े के मौसम में प्रातः ७ बजे हमने देखा कि पूज्य चच्चा जी महाराज हमारे कमरे पर मौजूद हैं। वह अचानक बा० काशीप्रसाद जी के घर से आये और कमरे में बैठकर बोले, अपनी माँ को बुलाओ। वह आई। चच्चा जी महाराज ने

उनको अपने सामने बैठाला। पूजा प्रारम्भ हुई। पूजा के पश्चात पूज्य चच्चा जी ने बड़े भाव विभोर होकर कहा कि तुम्हारी माँ बहुत संस्कारी हैं। यह तो सारे बन्धनों से मुक्त हैं। वैसा ही हुआ। इस महान् कृपा के लगभग एक महीने पश्चात् माँ का जब स्वर्गवास हुआ उस समय उनके अन्दर अद्भुत दिव्य शक्ति थी। जिस-जिस को जो २ आशीर्वाद दिया, वह सब सत्य ही सिद्ध हुआ। सब कुछ पूज्य चच्चा जी की अपार दया का ही प्रभाव था।

सेवक रेलवे की नौकरी में आगया और पूज्य चच्चा जी महाराज को उरई पहुँच कर सूचित किया। पू० चच्चा जी महाराज ने बहुत जोर देकर कहा कि जैसे २ तुम्हारा खर्च बढ़ता जावेगा, वैसी २ आमदनी भी बढ़ेगी। यह सब अक्षरशः सत्य हुआ। नौकरी के ४ वर्ष बाद ही सेवक को अपने मामा जी की कुल जमीन इत्यादि पूज्य चच्चा जी के आशीर्वाद से प्राप्त हुई, जो अब तक है।

लखनऊ में एक बार जब चच्चा जी महाराज के दर्शन हुये और हम उनके समीप बैठे थे, तो हमसे बड़े भाव पूर्ण मुद्रा में बोले, 'रामस्वरूप, अब हमारे ऊपर कृपा रखना, हम बड़े आश्चर्य में पड़ गये, और निवेदन किया, महाराज हम क्या आपके ऊपर कृपा करेंगे, तो दो मिनट बाद बोले। तुम समझ नहीं सके। अब तुम नौकरी करने लगे हो। अगर सदाचार के पथ से विचलित हो जाओगे, जिससे तुम संकट में पड़ सकोगे, तो उसके लिये मुझे तुम्हारी चिन्ता उठानी पड़ेगी और प्रबन्ध करना पड़ेगा। अधिक से अधिक सदाचार पूर्ण नौकरी करना है। उसी में मुझे चैन मिलेगा।

एक बार होली के पर्व के अवसर पर चच्चा जी महाराज की कृपा हुई और हम होली पर उरई पहुँचे। पर्व के दिन शाम के समय हमसे बड़े प्रसन्न होकर बोले- क्या घर की याद आ रही है? हमने उत्तर दिया- हां महाराज तो बोले, क्यों कि वहां गुझिया और अन्य पकवान मिलेंगे। हम चुप रहे और धीरे से कहा, हाँ महाराज बात तो ऐसी ही हैं। तो उन्होंने तीन दिन लगातार शाम को काली जामुन की मिठाई मंगाई और हँस २ कर मुझे और अन्य सत्संगी भाइयों को खिलाई। परन्तु पहले दिन ही उन्होंने बहुत भावपूर्ण मुद्रा में कहा कि अपने इष्ट एवं श्री भगवान के प्रकाश में तथा याद में जो भी जैसा भी भोजन खाया जायेगा उसमें अपार स्वाद होगा, सात्विक होगा और उस भोजन से जो रक्त बनेगा वह पूजा में बहुत बहुत सहायता करेगा।

सेवक कई वर्ष लगातार केवल दशहरा पर ही उरई सत्संग में पहुँच पा रहा था। एक बार जब हम दशहरा पर उरई सत्संग में गये तो मुझे बुलाकर बड़े भावपूर्ण मुद्रा में बोले कि रामस्वरूप तुम तो नीलकंठ हो गये, तो हम चुप रहे। अर्थ समझ में नहीं आ रहा था। तो महाराज जी बोले- असली नीलकंठ दशहरे पर ही दिखाई देता है। तुम केवल दशहरे पर ही दिखाई देते

हो। किसी प्रकार से नौकरी तथा गृहस्थी के कार्यों से समय निकाल कर के बीच २ में मिलते रहा करो। इसके पश्चात् समय निकाल कर हम दो महीने बाद पहुँचे, तो चच्चा जी ने अपने पूजा के कमरे में बैठालकर जो विशेष आध्यात्मिक शक्ति, दिव्य आनन्द, दिया वह वर्णन नहीं किया जा सकता। सच तो यह है कि:—

चाँद चमका किया, शमा जलती रही।

हम तरसते रहे रोशनी के लिये॥

मार्च सन् १९८१ की एक अद्भुत घटना जो हुयी जिसमें परमपूज्य चच्चाजी महाराज ने महान चमत्कार दिखाया, वह इस प्रकार है। हम कासगंज रेलवे क्वार्टर में रह रहे थे। रात के ८ ही बजे होंगे, पत्नी खाना बना रहीं थीं। किवाड़ खुले थे। अचानक १० बदमाश मय कट्टा पिस्तौल के घुस आये। एक ने पत्नी के कान के ऊपर पिस्तौल रख दी। एक ने हमारे सीने के ऊपर। हम दोनो पहिले बहुत ही घबड़ा गये। परन्तु दो सेकिन्ड बाद होश संभाला और एक, २ बार चच्चा जी की याद की। तो चच्चा जी महाराज आंगन में विकराल रूप लेकर आ गये। पत्नी से धीरे से दूसरे कान में कहा कि इनकी पिस्तौल खाली है। हमसे कहा कि इनका हिम्मत से मुकाबला करो। बस, हम एक लकड़ी का बड़ा सा चिल्ला लेकर खड़े हो गये, और एक २ को उससे मारना प्रारम्भ किया। उनका वह रुद्ररूप आगे था। हम और पत्नी उनके पीछे २ थे। वह सब बदमाश बड़े खूंखार डाकू थे, परन्तु लकड़ी के चेला से जब पिटने लगे, तो वह इतना घबड़ा गये कि सबके सब बहुत बुरी तरह से घबड़ाकर भाग खड़े हुये। कासगंज में समस्त रेलवे वाले इस घटना से बड़े हैरान रहे कि दो प्राणियों ने १० डाकुओं के गिरोह को चेला मारकर भगा दिया। हमारे बड़े लड़के की बहू ने साक्षात् रुद्ररूप में आंगन में चच्चाजी के दर्शन किये।

पूज्य चच्चा जी महाराज पर्दा होने के पश्चात भी उतनी कृपा कर रहे हैं जितनी कि पर्दा होने से पहले। उन्होंने कई बार इस सेवक से कहा कि जैसे घड़ी में चाबी थोड़ी देर ही दी जाती है, वैसे ही त्रिकाल पूजा अनिवार्य है। सुबह दोपहर, शाम निश्चित समय पर दृढ़ता के साथ पूजा में बैठो सारे विघ्न अपने आप हटते जायेंगे। रास्ता चलो तो मेरे प्रकाश में चलो। दफ्तर में बैठने से पहले एक मानसिक कुर्सी पूज्य गुरुदेव को दो। काम करो अपने इष्ट के प्रकाश में यह बार २ कहा करते थे। सत्यता तो यही है कि हर प्रकार से सत्संगी अथवा शरण में गये हुये के लिये दया व कृपा की झोली भरे वह खड़े रहते हैं। परन्तु हमारा दामन जिसमें हम दया रख सकें, छोटा ही रहा। हम उनकी अपार दया व कृपा का ठीक से आभास न पा सके।

आध्यात्मिक संप्रेषण

(श्री बालकृष्ण शर्मा 'विकास' उरई)

सरपट दौड़ता हुआ एक तांगा झाँसी शहर की सड़क पर दौड़ रहा था। तभी एक व्यक्ति ने उसके सामने आए हुए एक बालक को खींच कर बचा लिया था।

"शाबाश मेरे दोस्त, तुमने बड़े सबाब का काम किया।"

"सबाब तो कुछ नहीं किया। हां ईश्वर ने एक बालक को कुचल जाने से बचा लिया।"

"नहीं दोस्त तुम न होते तो बालक मर गया होता।"

"ऐसी बात कुछ नहीं, प्रभु को उसे बचाना था, बच गया।"

"प्यारे दोस्त नाम पूँछ सकता हूँ तुम्हारा ?"

"मुझे राजमूर्ति पांडे कहते हैं।"

"क्या करते हो ?"

"मैं यहीं रेलवे में मुलाजिम हूँ।"

"अच्छा फिर मुलाकात होगी, सलाम।"

"जी, सलाम।"

और तांगा चला गया।

यह बातचीत श्री राजमूर्ति पांडे जो बाद को कलेक्ट्रेट उरई की सर्विस से रिटायर हुए तथा झाँसी के एक तांगे वाले शाह जी से हुई। यह शाहजी जोबिकार्जन करने के लिए तो तांगा चलाते थे किन्तु थे एक पहुँचे हुए फकीर। यह आध्यात्मिक गुरु थे। उनका मकान झाँसी-उरई रोड़ पर शहर में चुंगीचौकी के पास बताया जाता है। इनके यहाँ सुबह शाम सत्संग भी होता था। इस बात को बहुत कम लोग जानते थे।

एक दिन शाह जी ने उनके सत्संग में आये हुए एक रेलवे कर्मचारी से पूछा ;

"तुम राजमूर्ति पांडे को जानते हो ?"

"जी हाँ, वह तो हमारे साथ ही काम करते हैं।"

"अमाँ यार, किसी दिन सत्संग में उन्हें ले आओ।"

"जी जरूर"

उस व्यक्ति ने राजमूर्ति पांडे से चलने के लिए कहा किन्तु कुछ दिनों ये टाल गए। कुछ पशोपेश में पड़े रहे। शाहजी ने उन्हीं रेलवे कर्मचारी से फिर जोर देकर कहा। तब एक दिन श्री पांडे शाहजी के यहाँ अपने मित्र के साथ गए। सत्संग हो रहा था। यह भी बिना किसी लगाव के बैठे रहे। सत्संग के बाद प्रसाद वितरित हुआ। पांडे जी ने ग्रहण करने में कुछ अनिच्छा सी जाहिर की। शाह जी ने देख लिया। पास आकर के बोले "पांडे खाओ तो।" पांडेजी ने मुझे बताया कि क्या बतायें उसके स्वाद की बेहद बेहतरीन था। तबियत खुश हो गई। २-३ दिन के बाद शाहजी के यहाँ पांडे जी पुनः गए। सत्संग के बाद शाहजी ने उन्हें बुलाया।

"अरे पांडे ! तुम्हारे गुरुजी ने तुम्हें उरई जरूरी बुलाया है, तुम फौरन जाओ।"

"कोई आया था आपके पास"

"यह पूछकर तुम क्या करोगे, उरई जाओ।"

पांडेजी बताते थे कि उन्हें पूरा विश्वास नहीं हुआ। कहाँ गुरु महाराज और कहाँ यह शाहजी। अतः वह उरई नहीं गए।

दूसरे तीसरे दिन चच्चाजी महाराज का जरूरी संदेश मिला जिसमें उन्हें उरई बुलाया गया था। पांडे जी छुट्टी लेकर उरई आए। उरई में चच्चा जी ने उनसे रेलवे की नौकरी छोड़ देने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि Retrenched सेटिलमेन्ट कर्मचारियों की नियुक्ति उरई कलेक्ट्रेट में हो रही है वहाँ Join करो। पांडेजी दिविधा में पड़ गए ८-१० वर्ष की रेलवे की नौकरी हो गई। अतः वह पशोपेश में पड़ गए। चच्चा जी ने उनके मन की बात ताड़ ली, बोले "तुरन्त रेलवे की नौकरी से स्तीफा दो और उरई Join करो" विवश होकर पांडे जी ने रेलवे से स्तीफा दिया और कलेक्ट्रेट उरई में आकर ड्यूटी ज्वाइन की।

देखा आपने यह आध्यात्मिक संत एक दूसरे से कैसे बात चीत कर लेते हैं।

जय श्री चच्चा जी महाराज की।

—(०)—

कर सरोज सिर परसेउ बिगत भई सब पीर।

— श्री राजबहादुर शर्मा
चन्द्रनगर, उरई

पूज्य चच्चाजी का निवास मेरे निवास स्थान से लगा हुआ है। अतएव कभी कभी उनके पास बैठ जाता था, वे मेरे कार्य और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में पूछ लिया करते थे।

जब कभी मैं अस्वस्थ हो जाता था, तो नित्य पूजा करने के उपरांत वे मेरा हाल पूछने अवश्य आया करते थे। उनकी विशाल हृदयता और मेरे प्रति उनकी सद्भावना सदैव बनी रही। जब कभी वे सामने पड़ जाते तो मैं उनके चरण स्पर्श कर लेता था परन्तु वे भी तुरन्त झुककर मेरे पैर छू लिया करते थे, जिससे मुझे अपने पर बड़ी लज्जा आया करती थी। अतः मैंने उनके चरण छूना बंद कर दिया और केवल नमस्कार, प्रणाम ही करने लगा। वे भी उत्तर में हाथ जोड़ कर यही किया करते थे। उनकी महानता और छोटों के प्रति अगाध प्रेम, मैंने संतों में बहुत कम पाया है।

मेरा यह भी अनुभव हुआ कि चच्चा जी पर लक्ष्मी जी की असीम कृपा थी। कई बार देखा कि जब कोई उनसे किसी वस्तु या कार्य करने का पैसा मांगने आता था तो वे तुरन्त ही जेब में हाथ डालकर रुपया दे दिया करते थे। यदि वह कहता कि कम हैं इतने और चाहिए तो दूसरी जेब में हाथ डालते और रुपया दे देते। वे गिनते नही थे परन्तु आश्चर्य यह था कि उनके हाथ में उतने ही रुपये आते थे जो उन्हें देना होते थे। मैं समझता हूँ कि जेब तो उनकी खाली रहती थी परन्तु वे जो कुछ देने का संकल्प करते थे वह धनराशि उनकी जेब में आ जाती थी।

उनका व्यक्तित्व भी अनोखा था। मैंने कभी किसी भी व्यक्ति पर रोष करते हुए नही देखा और न कभी जोर से बोलते देखा। वे सदैव एकरस रहते थे।

वर्ष १९६७ में मैं बहुत बीमार हो गया। सिविल अस्पताल के डाक्टर इलाज कर रहे थे। ६महीने इलाज करने के उपरान्त एक्सरे कराया और बोन टी० बी० बता दी। मैं चच्चा जी के पास जाकर रोने लगा तो उन्होंने कहा कि

तुमको यह बीमारी नहीं है। तुम शीघ्र ठीक हो जाओगे। मैंने पं० रामगोपाल शर्मा वकील का होम्योपैथिक इलाज कराया और ५-६ दिन में स्वस्थ हो गया। यह मैं चच्चा जी की कृपा मानता हूँ वर्ना डाक्टरी सलाह यह थी कि मेरे गर्दन से कमर तक प्लास्टर चढ़ेगा और एक इन्जैक्शन स्ट्रैप्टोमाइसिन का २ माह तक लगेगा। इस प्रकार चच्चा जी के आशीर्वाद ने मुझे महान संकट से उबार लिया।

वर्ष १९६५ में मेरे साथी श्री दशरथ सिंह तोमर रिटायर्ड एकाउन्ट आफीसर फाइलेरिया से पीड़ित होकर अत्यन्त अस्वस्थ हो गये। विभिन्न योग्य डाक्टरों द्वारा इलाज कराया गया परन्तु कोई सुधार नहीं हुआ। अन्ततोगत्वा वे चच्चा जी के पास आये, प्रसाद लिया। चच्चा जी ने उन्हें बेल फल की भाप लेने की सलाह दी। कुछ दिनों में रोग जड़ से चला गया।

दूसरी घटना मेरे साथी श्री रामदयाल जी की है वे तांत्रिक थे। उन्होंने डा० शिवराम अग्रवाल के घर पर जमीन में गढा धन निकलवा कर दे दिया। उसी रात्रि में श्री रामध्यान सिंह जी को तेज बुखार चढ गया और डाक्टरों द्वारा चिकित्सा करने पर भी बुखार नहीं गिरा। उनकी दशा बिगड़ती चली गई। दूसरे दिन श्री दशरथ सिंह जी तोमर चच्चा जी के पास गए और उनसे कहा कि श्री रामध्यान सिंह जी की हालत बहुत खराब है। चच्चा जी कड़ी धूप में दोपहर के समय ही पैदल चल दिये। वहां पर पहुँच कर एक घण्टा ध्यानावस्था में रहे और आंखे खोलते ही बोले आपने बहुत बुरा किया। फिर बताया कि इनकी हाथ और पैरों के तलवों पर प्याज का रस मला जाय और बुखार उतरते ही तुरन्त यहां से हटा लिया जाय। ऐसा ही किया गया और श्री रामध्यानसिंह जी स्वस्थ हो गए।

चच्चा जी महाराज में सभी प्रकार की शक्तियाँ विद्यमान थीं, चाहे वे सांसारिक हों अथवा आध्यात्मिक। दैहिक, दैविक और भौतिक ताप से रक्षा करने वाली शक्ति क्या इसलोक से उठ गई है नहीं श्रीचच्चाजी इन शक्तियों से सम्पन्न थे और उनकी कृपा उनके भक्तों पर बरसती रहती है, ऐसा अनुभव उनके भक्तगण किया करते हैं।

गुरू व्यापक सर्वत्र समाना

महावीरसिंह सोलंकी सुरजई (एटा)

आपने परमपूज्य चच्चा जी (गुरुमहाराज) के संस्मरणों के लिखने के सम्बन्ध में आदेशित किया है। इस सम्बन्ध में क्या वर्णन करू, उनकी कृपा सदैव मेरे ऊपर रही और उनकी कृपा से ही यह जीवन है, और शेष जीवन भी पूरा हो जायेगा।

—जीवनदाता बादलों की वर्षा हर स्थान पर होती है। हरी भरी खेती हो, किंवा ऊसर भूमि हो। वास्तविकता तो यह है कि मैं बहुत अधिक समय तक परमपूज्य चच्चा जी के स्वरूप एवं शक्ति को समझने में असमर्थ रहा। जब उनकी कृपा से कुछ बोध हुआ, वह अपनी जीवन लीला पूर्ण कर गये। किन्तु मैं समझता हूँ कि वह अब भी हमारे बीच हैं और समय-समय पर अपनी उसी अनूठी शक्ति से हमारी डांवाडोल स्थिति में सहायता करते हैं। अब आपकी आज्ञानुसार एक-दो घटनायें जो मुख्य हैं, उनके संस्मरण के रूप में अंकित कर रहा हूँ।

—दशहरा के महान पावन पर्व पर प्रायमरी पाठशाला जहां पर हम लोग रुकते थे, दशहरा के दिन ही घर-घर से लाये गये प्रसाद को एक स्थान पर एकत्रित कर लिया गया था और बांटने की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। चू कि उन दिनों गर्मी अधिक थी और पूड़ियां आदि कुछ खराब हो गई थीं। इस कारण उस प्रसाद को पाने के साथ यह इच्छा जाग्रत हुई कि एक नीबू मिल जाता तो उत्तम रहता। यह सोचने में कुछ भी देरी नहीं हुई कि परमपूज्य चच्चा जी स्वयं एक पूरा नीबू [अचार का] अपने कर कमलों में लिये आये और इस दास को दिया और कुछ मुस्कराये। मुझे अपने ऊपर कुछ क्रोध हुआ और आत्मिक ग्लानि हुई। यह विचार कर कि मेरे में यह भाव जाग्रत क्यों हुआ। किन्तु कभी-कभी यह सोचता हूँ कि परमपूज्य चच्चा जी महाराज ने ही अपना प्रेम जाग्रत करने के लिए ही यह लीला की हो।

—जीवन काल की अनेकानेक घटनायें सामने आईं, जिनको लिखना आवश्यक समझते हुए भी नहीं लिख रहा हूँ। परम पूज्य चच्चा जी महाराज के पर्दा कर जाने के पश्चात, बहुत समय के पश्चात २ अप्रैल सन् ८५ को गांव में ही एक ठाकुर श्री सत्यभानसिंह की हत्या कर दी गई और

उस केस में मुझे भी अपराधी बनाया गया। मेरे साथ मेरे भतीजे तथा अन्य दो व्यक्तियों के नाम रिपोर्ट हुई। मुझे न्यायालय के समक्ष आत्म समर्पण करना पड़ा। उच्च न्यायालय इलाहाबाद से जमानत हुई। कारागार से निकलने के कुछ पश्चात ही अपना स्टेट बैंक की पासबुक No. A/44 जो जून सन् ८२ से अनदेखी पड़ी थी। पुत्री राधा की शादी में सब पैसा निकाल लिया था, केवल 103.74 रुपया शेष रह गये थे। मैंने सोचा कि कहीं पासबुक में से लेन—देन न करने के कारण हिसाब मुर्दा तो नहीं हो गया। यह सोच कर मैं बैंक गया सम्बन्धित कर्मिक से पूंछ—ताछ की। उन्होंने मेरा खाता देखा और कहा कि आपके खाते में इसके बाद भी पैसा जमा हुआ है। उन्होंने मेरी पासबुक लेकर उसमें ८००.०० आठ सौ रुपये जमा कर दिये। यह आठ सौ रुपये ३०—४—८५ को जमा दिखाये। मैंने यह विचार कर कि किसी घर वाले, सम्बन्धी अथवा मित्र ने मुसीबत के दिनों में जमा कर दिये होंगे। इस सम्बन्ध में लोगों से जानकारी की किन्तु किसी ने ऐसा करने का संकेत नहीं दिया। बड़ी संदिग्धता की स्थिति थी। मैं पुनः बैंक गया और सम्बन्धित लिपिक से ३०—४—८५ को जमा पर्ची निकलवाने के लिये कहा। उन्होंने जमा पर्ची निकलवाई। उस पर्ची में जमा कर्त्ता के स्थान पर अंग्रेजी में मेरे हस्ताक्षर थे। यह देखकर आश्चर्य में पड़ गया, और मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि यह कार्य परम पूज्य चच्चा जी महाराज का है। मैं विचार करता हूँ कि उन्होंने मेरा उत्साह बढ़ाने के लिये ही यह चमत्कार किया हो। ३०-४-८५ को मैं स्वयं कारागार एटा में कैदी के रूप में उपस्थित था।

जब यह ३०२/३०७ का मुकदमा न्यायालय में विचाराधीन था, एक रात्रि को अर्द्ध रात्रि के पश्चात मैंने एक स्वप्न देखा। स्वप्न में एक नाव पर हम चारों अपराधी जो इस मुकदमे में पेश बैठे हुये थे, नाव एक बड़ी नदी में थी और मल्लाह उसे खे रहा था। कुछ ही क्षणों में नाव नदी के इस पार आगई। मल्लाह का रूप तो याद नहीं रहा। प्रातः काल मुकदमें की तारीख थी। मैंने घर में राधा की मां से स्वप्न की बात बताई और कहा कि मुकदमे की तारीखें तो पड़ सकती हैं। हम सभी लोग दोष मुक्त अवश्य हो जायेंगे। उसी दिन इस स्वप्न के सम्बन्ध में अपने वकील श्री मुरली मनोहर पालीवाल को भी बताया, और कहा कि आप को विशेष पैरवी इस मुकदमे में नहीं करनी होगी। हम लोग छूटेंगे ऐसा विश्वास है। खैर। जो भी हो मेरा तो यही विश्वास है कि केवट रूप में वही दयालु, जिनका स्नेह मेरे ऊपर रहा थे। अन्त में वह स्वप्न भी सत्य सिद्ध हुआ। २९ अप्रैल सन् ८९ को हम चारों लोग ही इस मुकदमे में दोष मुक्त सिद्ध किये गये। यह उसी महान शक्ति, चच्चा जी महाराज जी कृपा का फल था।

राम सदा सेवक रुचि राखी

—डॉ० बी० बी० लाल भू०पू० प्राचार्य
१०६ ए रामनगर, उरई।

अन्तिम संस्कार के लिए प्रार्थना

—" एक प्रार्थना है महाराज !
— कहो, लालाजी क्या बात है ?
— हमें क्षमा करें प्रभो आप ! हमारी कामना है कि हमारा अंतिम संस्कार आपके हाथ से हो।
— अरे ! कैसी बात करते हैं। ईश्वर कृपा करेंगे ।"

परम पूज्य श्री श्री चच्चाजी साहब तथा पू० पिता जी के बीच हुए इस वार्तालाप को सुनकर मैं कुछ अचम्भित हुआ । बात यह श्री गुरुपूर्णिमा १९६० के समारोह के समापन के पश्चात वापिस भोपाल जाने के समय की है। मैं उन दिनों भोपाल में शासकीय हमीदिया महाविद्यालय में हिन्दी का सहा० प्रोफेसर था। इस वार्ता को मैंने अधिक गंभीरता से नहीं लिया । स्पष्ट ही था कि किस प्रकार यह संभव होगा ? बात आई गई हो गई ।

× × × ×

१६-११-१९७.

मैं पू० श्री श्री चच्चा जी सा० के सामने उनके कमरे में बैठा रो रहा था। मेरे आँसुओं को वह पोंछ रहे थे और वह स्वयं भी आंसू बहा रहे थे। मैं उनके आंसू पोंछ रहा था। उन्होंने कहा कि लालाजी का संस्कार हम अपने हाथों करेंगे। श्री श्री चच्चा जी अस्वस्थ थे। अतएव उनसे आग्रह-पूर्वक कहा गया कि आप अस्वस्थ हैं। श्मसान में आपका जाना और परेशानी पैदा कर देगा किन्तु श्री श्री चच्चाजी सा० अपनी हट पर अड़े रहे। फिर भी काफी आग्रह-अनुरोध हुआ तो अंत में श्रीश्री चच्चाजी सा० ने यह तजवीज की कि लालाजी का पार्थिव शरीर यहाँ आश्रम से होकर जाएगा। यही किया गया।
शव कुंऐ के पास तिराहे पर रखा गया। श्री श्री चच्चा जी सा० ऊपर से

नीचे उतरे। शव की परिक्रमा की और १०-१५ मिनट बैठकर तवज्जह दी। इसके पश्चात मुझसे कहा कि श्मसान ले जाओ और हमारी ओर से संस्कार करो। इस प्रकार हमारे पू० पिताजी की कामना पूरी की और उनकी रुचि को रखा।

× × × ×

हुआ यह कि १९६४ में स्थानीय दयानन्द वैदिक कॉलिज में प्राचार्य का पद रिक्त हुआ। मुझे आज्ञा हुई कि मैं आवेदन करूं। मैंने आवेदन किया तथा मेरी नियुक्ति हो गई। म०प्र० शासन ने मुझे दीर्घ अवकाश स्वीकृत हो गया। मैंने कार्यभार सम्हाल लिया। पू० पिताजी के अन्तिम संस्कार से पूर्व तक मुझे १९६० की पू० पिताजी की श्री श्री गुरुदेव की सेवा में अपनी अन्तिम संस्कार के करने की कामना निवेदित करने का प्रसंग पूर्णतया विस्मृत रहा। उस समय मैं यह मान चुका था कि यह सम्भव नहीं हो सकेगा। श्री श्री चच्चाजी सा० ने पू० पिताजी का मन रखने के लिए कह दिया कि ईश्वर कृपा करेंगे ।

+ × + ×

अन्तिम संस्कार के समय श्री श्री चच्चा जी सा० का प्रबल आग्रह कि वह स्वयं संस्कार करेंगे तथा फिर शव को अपने निवास के पास मंगाने तथा भौतिक से कहीं अधिक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक अन्तिम संस्कार करने की व्यवस्था को देखकर मुझे पूर्व प्रसंग स्मरण आया तथा मैं श्री श्री चच्चाजी महाराज की अपने सेवक की रुचि रखने के लिए की गई संपूर्ण योजना के सुनियोजित स्वरूप को देखकर हतप्रभ हो गया। मेरा शासकीय सेवा छोड़ने का कतई मन नही था। कालान्तर में प्राचार्य पद वहाँ भी मिलता। इसलिए कोई विशेष रुचि भी नहीं थी। केवल आज्ञा पालन तथा निकट संपर्क में आने के लिए कुछ समय मिलने के प्रलोभन ने ही मुझे प्रेरणा दी। यह सब मैं समझता हूँ श्रीश्री गुरुदेव की अपनी स्वयं की व्यवस्था थी जिसका उन जैसे परमसिद्ध पुरुषों को अधिकार होता है तथा प्रकृति उनकी इच्छामात्र का बड़ी तत्परता से पालन करती है।

× × × ×

श्री श्री गुरुदेव का वचन है —"जब तक शब्द अथवा वचन वाणी से नहीं

निकलते तब तक वह मनुष्य के वश में रहते हैं परन्तु मुंह से निकलते ही मनुष्य को उनके आधीन हो जाना पड़ता है। जो मुंह से निकले हुये वचन का पालन करता है, वह मनुष्य है और जो शब्द का पालन नहीं करता वह अपनी मनुष्यता का नाश करता है।

इन वचनों की गुरुता एवं गम्भीरता, श्री श्री गुरुदेव के चरित की उपर्युक्त जैसी अति साधारण घटनाओं से प्रतिपादित होती है। उनके महान व्यक्तित्व की दिव्य छवि अपने प्रेमीजनों के प्रति ओतप्रोत प्रेम, हित कामना, शुभ-चिंतन के दर्शन होते हैं। भौतिक शरीर के प्रतिबिम्ब में उनका ममतामय बिम्ब दृष्टिगोचर होता है। अपने साधारण एवं अन्यथा मात्र औपचारिक वचन का कठोरता से पालन करते थे, प्रकृति को बदल देते थे। यों अपने उन्होंने अप्रकट अनेक कठोर नियम एवं बंधन भी बना रखे थे जिनका कठोरता से पालन करते थे। तथा जिनके वशवर्ती वह अपने अंतर में विवश दिखलाई देते थे, दूसरी ओर अपने प्रियजन की हित कामना के लिए, उसकी साधारण-सी इच्छा को पूरा करने के लिए संतति समर्पित दाशरथी मोह और ममता में विकल और विह्वल प्रकट होते थे। कौन उन्हें जान सका, कौन उन्हें पहिचान सका—

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हसि।

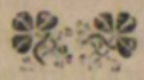

ईश्वर की आज्ञायें

और तू अपने प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, अपने सारे प्राण से, अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से प्रेम करना मुख्य आज्ञा है यही है। और दूसरी यह है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना; इससे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं है। —बाइबिल

परम पूज्य चच्चा जी महाराज

भगवतीशरणदास, झांसी

परम पूज्य चच्चा जी महाराज की चारित्रिक घटनायें सर्वथा अप्राकृत थीं। प्रत्येक व्यक्ति उन्हें अपनी भावना के अनुसार देखता तथा अनुभव करता था। आत्मानुभूति होने के उपरान्त देह-देही का भेद मिट जाता है। महाभारत में आया है।

"न भूत संघ संस्थानो देवस्य परमात्मनः।
यो वेत्ति भौतिकं देहं कृष्णस्य परमात्मनः॥
स सर्वस्माद् बहिष्कार्यः श्रौत स्मार्त विधानतः।
मुखं तस्यावलोक्यापि सचैलः स्नानमाचरेत॥

भगवान का देह भौतिक नहीं होता। जो परमात्मा श्री कृष्ण को भौतिक शरीरधारी समझता है, उसे महा पाप लगता है उसका समस्त श्रौत स्मार्त कर्मों से बहिष्कार कर देना चाहिये। उसका मुख देखने पर स्नान करना चाहिये तथा वस्त्रों को धो डालना चाहिये।

सन्त सद्गुरु को समस्त शास्त्र ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर का साकार स्वरूप तथा परब्रह्म ही मानते हैं। ऐसी दृढ़ भावना बनाकर ही चच्चा जी महाराज के लीला चरित्रों को देखना चाहिये तथा उनसे सम्बन्धित संस्मरणों को पढ़ना, सुनना चाहिये, तभी यथार्थ लाभ होगा अन्यथा हानि की सम्भावनायें हैं।

परम पूज्य श्री श्री चच्चा जी महाराज तथा परम पूज्यनीया जगजननी भगवती अम्मां जी महारानी दोनों एक ही हैं। परमात्मा में स्त्री पुरुष आदि भेद नहीं हैं। दोनों के चारित्रिक संस्मरण एक रूपात्मक हैं।

श्री चच्चाजी : निकटतम संबंधी

श्री चच्चा जी महाराज का ललितपुर से उरई स्थानान्तरण हो गया था। मैं गवर्नमेन्ट हाई स्कूल ललितपुर में कक्षा ६ में पढ़ता था। एक दिन की घटना है, मैं कक्षा में ही चच्चा जी महाराज को पत्र लिख रहा था। मैं उनके तथा अम्मां जी के ध्यान में खोया था, पत्र लिखता जाता था, नेत्रों से प्रेमाश्रु का प्रवाह जारी था। अध्यापक महोदय पाठ पढ़ा रहे थे। उन्होंने मुझे देखा तथा क्रुद्ध हो उठे। आज्ञा दी स्टूल पर खड़े हो जाओ। मैंने उनकी आज्ञा

शिरोधार्य की. स्टूल पर खड़ा हो गया। वे रोष भरे शब्दों में कड़क कर बोले, भाई साहब आप क्या कर रहे हैं। मैंने स्पष्ट तथा सच सच बता दिया 'पत्र लिख रहा हूँ'। उन्होंने कहा कि किसे पत्र लिख रहे हो। क्या तुम्हारा कोई निकटतम सम्बन्धी है। (Is there any nearest and dearest to you") मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने पुनः प्रश्न किया. "मैं क्या पढ़ा रहा था।" मैंने सही उत्तर दिया। उनका क्रोध शान्त हुआ। बोले बैठ जाओ। अध्यापक महोदय को उसी दिन विषम ज्वर का आक्रमण हुआ। आठ दिनों बाद जब वे स्वस्थ होकर कक्षा में आये उन्होंने खेद व्यक्त किया, तब उन्हें शान्ति मिली। वे स्वय बार बार कहते रहे, भाई साहब मुझे यह नहीं कहना चाहिये था, "Is there any nearest and dearest to you." मैं मौन रहा।

❀❀❀

सत्संग में विचार प्रवाह

—श्री रामपालसिंह, शिकोहाबाद सत्संगी

चित्रकूट में कलकत्ता वालों की धर्मशाला में सभी यात्री ठहरे थे, प्रातःकाल का समय था। सब लोग स्नानादि से निवृत्त होकर ऊपरी मंजिल में एकत्रित हो रहे थे। प्रातःकालीन सत्संग आरम्भ होने वाला था। परम पूज्य चच्चा जी सत्संग स्थान पर आ चुके थे तथा सभी लोग एकत्रित हो चुके थे, महिलाऐं एक ओर बैठी थीं और पुरुष दूसरी ओर। सत्संग आरम्भ होने का समय हो चुका था। परन्तु परम पूज्य चच्चा जी ने सत्संग आरम्भ नही किया प्रत्युत किसी के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। थोड़ी देर में एक सत्संगी महोदय आए और बैठने ही वाले थे कि महाराज जी ने उनसे कहा "क्या खो गया है" 'कुछ नहीं चच्चा जी' वे बोले — "अरे नहीं" तुम्हारा लोटा खो गया है जाओ खोज कर रख आओ, तभी सत्संग में बैठना नहीं तो सबके मन में उसी प्रकार लोटा घूमेगा जैसे तुम्हारे मन में। वे सज्जन उठ गये और ५-७ मिनट में लोटा खोज कर रख आये और सत्संग में बैठ गये। महाराज जी ने पूजा [आन्तरिक सत्संग] आरम्भ करा दी। सबके मन में लोटा घूमने की पहेली बाद में स्पष्ट हुई कि आन्तरिक सत्संग में पूरे जन समूह का मन एक हो जाता है और यदि एक व्यक्ति के मन में कोई विकार होता है तो वह सबके मन में चक्कर काटता है और समाधि की स्थिति प्राप्त होने तक अवरोध करता रहता है, जो सत्संग में विघ्न बन जाता है। अतः सत्संग में मन को खाली [विचारशून्य] करके बैठना परम आवश्यक है।

प्रभु मूरति तिन तैसी देखी

— श्री भगवती शरण दास

[श्री भगवती शरण दास श्री श्री चच्चा जी तथा गुरुमाता श्री श्री अम्मा जी के अनन्य भक्त एवं उपासक हैं। श्री श्री अम्माजी की विशेष कृपा उनको प्राप्त है। उनके संस्मरण भावपूर्ण एवं प्रेरक हैं।]

मेरी बाल्यावस्था में ही माता पिता समेत मेरे सभी परिवारजनों का परलोक वास हो चुका था। मेरे मन में दृढ़ निश्चय था कि भगवती सीता मेरी माता तथा भगवान राम मेरे पिता हैं। मुझे यह भी दृढ़ विश्वास था, मुझे इसी शरीर से भगवती सीता तथा भगवान राम अवश्य मिलेंगे।

मुझे जब श्री चच्चा जी महाराज के प्रथम दर्शन ललितपुर में हुए मेरे अन्तःकरण ने पहिचान लिया कि यही भगवान श्री रामचन्द्र हैं और हमारे इष्टदेव हैं तथा हमारे सच्चे पिता हैं। कुछ समय उपरान्त जब मुझे पूजनीया श्री अम्मां जी महारानो के दर्शन हुए तो उनमें श्री सीताजी महारानी को पाया।

मुझे ऐसा दृढ़ निश्चय था कि मेरा प्राप्तव्य प्राप्त हो चुका है। मुझे पूजा-अर्चा अथवा ब्रह्म-विद्या सीखने की न चाह थी न परवाह। मेरा मन स्वीकार कर चुका था, कि सबका फल ईश्वर प्राप्ति है, वह मुझे हो चुकी है।

जब मेरा विवाह नहीं हुआ था। मैं झांसी में अकेला ही एक मकान में रहता था। शिशिर ऋतु थी। ठण्ड कड़ाके की थी। ओढ़ने – बिछाने के कपड़े मेरे पास पर्याप्त न थे। रात्रि में जब सर्दी बढ़ गई और मैं कांपने लगा तो देखा श्री अम्मां जी महारानी प्रगट हो गईं। वे सारी रात मेरी चारपाई के नीचे आग जलातीं तथा सर्दी के वेग को नष्ट करती रहीं। मैं इतने सुख से सोता रहा जैसे छोटा शिशु अपनी मां की गोद में सोता रहता है। यही उनकी ममता तथा भक्तवत्सलता थी।

—(०)—

॥ ॐ ॥

श्री गुरुवे नमः

—लेखक : श्री गजराजसिंह

ग्राम- रिरुआ, हमीरपुर

गुरु ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः

गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः

हे परम पूज्य श्री सतगुरु देव चच्चा महाराज आपकी महिमा अपार है, जिसका वर्णन करने में विद्वान भी मूक हो जाते है तो हम जैसे मूर्ख आपके चरित्रों का वर्णन किस प्रकार कर सकते है। पूज्य चच्चाजी महाराज आप तो गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी महाराज विदेह की तरह ज्ञानी व निस्पृह थे आपका जीवन कितना सरल और सत्य प्रेम पूर्ण था। पूज्य चच्चाजी महाराज साधना व अभ्यास के मुख्य लक्ष्य को मन की एकाग्रता को ही बतलाते थे कि मनुष्य के शरीर में मन ही एक ऐसा अंग है जो मनुष्य को आत्म साक्षातकार कराता है, और यही मन मनुष्य को निकृष्ट कर्मों में प्रवृत्त कर नीचे की ओर गिराता और चौरासी लक्ष्य योनियों में भटकाता रहता है। पूज्य चच्चा जी महाराज के भक्त व साधक लोग अकसर कहते थे, कि चच्चा जी महाराज जब हम ध्यान करने के लिये बैठते हैं उस समय यह मन न जाने कितने समय ध्यान से विलग होकर कहाँ भटकने लगता है और हम अपने इष्ट देव गुरु चरणों के ध्यान से अलग हो जाते हैं। उस समय पूज्य चच्चा जी बताया करते थे कि साधना व अभ्यास से मन के जो विकार हैं, वे सब बाहर की ओर उभड़ने लगते हैं जैसे कि सूर्य के प्रकाश से भली व बुरी सभी वस्तुएं प्रतीत होने लगती हैं। इसी प्रकार आत्मप्रकाश से गुण व अवगुण मन में उमड़ने लगते हैं, पर साधक को इस प्रकार के मन उद्वेग से सावधान रहकर निरन्तर अभ्यास करते रहना चाहिये। कुछ दिनों के निरन्तर अभ्यास से स्वयं आत्मप्रकाश प्रतीत होने लगता है, और मन के सभी विकार अपने आप नष्ट होकर मन स्थिर होकर आत्म प्रकाश में विलीन होने लगता है और साधक उस आत्मप्रकाश में मग्न होकर शान्ति को प्राप्त करता है और समस्त मनो विकार से उत्पन्न होने वाले भेदभाव व भ्रम नष्ट हो जाते हैं, जैसा कि श्री गोस्वामी जी ने रामायण में कहा है—,

आतम अनुभव सुख सुप्रकासा।
तबभव मूलभेद भ्रम नासा॥

परन्तु इनके लिये साधक को निरन्तर सत्संग व अभ्यास करना परम आवश्यक है।

बिन सत संग विवेक न होई।
राम कृपा बिन सुलभ न सोई॥
बिन सतसंग न हरि कथा तेहि बिन मोह न भाग।
मोह गये बिन राम पद होइ न दृढ़ अनुराग॥

इस लिये साधक को निरंतर हरि नाम स्मरण करना और सत्संग करना परमाश्यक है। इस प्रकार अभ्यास से अन्तः करण निर्मल हो जाता है, और अनायास ही हरि चरणों में अनुराग प्रकट होने लगता है।

रामायण में कहा है—

राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजियार॥

शास्त्रों में बताया है कि नाम जप से ही पापात्मा दुष्कर्मी मूर्ख व विद्वान और संत महात्मा सभी अपने कर्म से मुक्त होकर अपने परम तत्व को प्राप्त कर ब्रह्मलीन हो जाते है। साधक को अभ्यास द्वारा गुरुदेव के बताये हुये साधन पर चलकर अपने मन को अपने इष्ट देव के नाम का जप व ध्यान करते हुये निरंतर उनके चरणों में अनुराग बढ़ाते रहना चाहिये। बस इसी के द्वारा साधक अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। इसमें किसी प्रकार का संदेह नही है। परन्तु इसके लिये निर्मल अन्तः करण अर्थात मन का निर्मल होना परमआवश्यक है। क्यों कि पूज्य चच्चा जी ने अपने लेख में इस चोपाई का उल्लेख किया है।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा॥

निर्मल मन प्राप्त करने के लिये साधक को गुरुदेव की शरण में जाकर अपने किये हुये अपराधों को स्वीकार कर गुरुदेव से छमा याचना कर और आगे अपराध न करने की प्रतिज्ञा कर लेनी चाहिये कि मैं आज से किसी प्रकार का कोई अपराध नहीं करूँगा, तब गुरुदेव अपने दिव्य प्रकाश से साधक के पापों को भस्म कर देते हैं। साधक का मन निर्मल होकर परम शांति को प्राप्त कर तद् स्वरूप को प्राप्त कर सारे कर्म बन्धनों से मुक्त हो सत चितानन्द को प्राप्त होता है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

माता-पिता के चरण स्पर्श की शिक्षा

— ब्रह्म आनन्द

[श्री ब्रह्म आनन्द डा० बी० बी० लाल के सुपुत्र हैं तथा श्री श्री चच्चाजी महाराज के निकट संपर्क में अपने बालकपन से हो आए हैं। प्रायः उनके दर्शन करने और आशीर्वाद लेने जाते रहे हैं। उनका घर का नाम गुड्डू जी है।]

"आओ आओ गुड्डू ! सब ठीक ठाक है।'

"जी !

"कहाँ जा रहे हो ?"

"स्कूल जा रहा हूँ।'

"अपने माता-पिता के पैर छूकर आए थे ?"

"जी !

"कैसे छुए थे पैर ? इधर आओ। सामने बैठो।'

सामने बैठते ही श्रीश्री चच्चा जी महाराज अपना सिर गुड्डू के पैरों पर रख देते हैं। उनका मस्तक गुड्डू के पंजों का स्पर्श करता है। समझे इसको चरण स्पर्श कहते हैं। ऐसे पैर छुआ करो।"

यह व्यवहारिक पाठ बालमन में कितना बैठा और रोम-रोम को झंकृत किया, यह तो गुड्डू भी न जान सके होंगे किन्तु जो यह दृश्य देख रहे थे, वह यह समझ ही न सके कि यह क्या हो रहा है परन्तु शिक्षा का व्यवहारिक पाठ कैसे पढ़ाया जाता है, यह समझ गये और समझ गये कि बड़े बड़प्पन क्या होता है ?

गृहस्थ संत

—डा० दुर्गा प्रसाद खरे प्राध्यापक
दयानन्द वैदिक कालेज, उरई

विरागी संत और गृहस्थ संत में गृहस्थ संत की भूमिका कहीं कठिन और कष्टसाध्य होती है। गृहस्थ संत को एक गृहस्थ के सम्पूर्ण दायित्वों का बड़ी सावधानी और सजगता से निर्वाह करना होता है। लोकाचार की मर्यादाओं का परिपालन करना होता है। उधर संत की साधना लोकनिरपेक्ष रूप में करनी होती है। लोक निर्वाह उनका साकार और संतसाधना उनका निराकार रूप होता है। उन्हें नर और नारायण दोनों भूमिकाओं का आदर्श उपस्थित करना होता है। इस दृष्टि से श्री श्री चच्चाजी महाराज अपने आप में स्वयं आदर्श हैं। अन्य गृहस्थ संत उनका अनुसरण करने में भी पीछे रह जावेंगे।

गृहस्थ संत की सबसे बड़ी कठिनाई उसके परिवार के प्रति प्रेमीजनों का अति श्रद्धा-सम्मान भाव होता है जिसके कारण प्रायः संत परिवार के सदस्य उच्छृंखल हो जाते हैं, लोकाचार की उपेक्षा करने लगते हैं। श्री श्री चच्चा जी महाराज इस दृष्टि से अपने परिवारीजनों के प्रति बड़े सावधान थे। उनके चतुर्थ सुपुत्र श्री कृष्ण दयानन्द वैदिक महाविद्यालय में मेरे प्रिय छात्र थे। गुरुपुत्र होने के नाते मैं उनका बड़ा सम्मान करता था। एक दिन पूज्यचच्चाजी महाराज ने श्री कृष्णजी को बुलाकर मेरे सामने जो निर्देश उन्हें दिए, उन्हें सुन कर मैं चकित रह गया। मैंने देखा कि श्री श्री चच्चा जी महाराज अपने बच्चों के सदाचरण एवं लोकमर्यादा पालन के प्रति कितने सावधान थे। उन्होंने श्रीकृष्णजी से आदेश के रूप में कहा, 'यह तुम्हारे अध्यापक हैं। तुम्हारे शिक्षा गुरु एवं आचार्य हैं। इनका सदा मम्मान - समादर करना तथा सावधान रहना कि कभी भी, किसी भी प्रकार इनकी उपेक्षा या अवमानना न हो। तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य की यही कुंजी है।' मुझे प्रसन्नता है कि श्री कृष्ण जी ने उनके इस आदेश का सदा ध्यान रखा और उनके आशीर्वाद रूप उज्ज्वल भविष्य के अधिकारी बने। बड़े हर्ष और संतोष का विषय है कि आज वह डी०लिट्० हैं और एक ख्यातनाम उच्च शिक्षा संस्थान, प्राच्य दर्शन महाविद्यालय वृन्दावन के प्राचार्य हैं।

"जय शंकर जय भवानी शंकर"

—श्रीमती कुसुम श्रीवास्तव, गिन्नौरी, भोपाल

श्री गुरु "श्री भवानी शंकर जी" का दिव्यालौकित मन्दिर मेरे भाई श्री काशीप्रसाद श्रीवास्तव जी के निवास स्थान राजेन्द्र नगर लखनऊ के प्रथम कक्ष में विद्यमान है। उनकी (श्री काशीप्रसाद जी) की अनन्य श्रद्धा एवं भक्ति ने श्री गुरु जी को उनके निवास स्थान पर मूर्तरूप में पहुंचने को विवश कर दिया।

मैंने जब से होश संभाला है मैं भाई काशीप्रसाद जी के तपस्वी एवं परोपकारी, मितभाषी, त्यागी आचरण के कारण अधिक प्रभावित रही। उनकी पत्नी श्रीमती विद्यादेवी साक्षात् गुरु माता रूप हैं। सभी भक्तजन सदाचार आश्रम में पहुंचते हैं। वे दोनों अपने सेवा भाव के कारण सभी के लिये श्रद्धेय हैं।

श्री गुरु जी श्री श्री चच्चा जी महाराज मानव स्वरूप में देव अवतरित पुरुष हैं। उनको जो भी भक्तजन सच्चे हृदय से स्मरण करते है उन पर वे अवश्य ही दया दृष्टि करते हैं। एक बार मुझे याद है मैं बहुत परेशान थी। मेरे समक्ष दीवाल पर गुरु जी का एक चित्र टंगा हुआ था। मेरी कल्पना ने गुरु जी से इच्छा प्रकट की कि गुरु जी इस समस्या का हल क्या है? आप किसी भी संकेत द्वारा मुझे आभास करा दीजिये।

मुझे उन्होंने संकेत द्वारा उस समस्या का समाधान बताया। तभी से मेरे हृदय में उनके प्रति श्रद्धा एवं भक्ति का भाव अंकुरित हो गया।

एक वर्ष पूर्व सन् १९९० में १५ मई को मुझे गुरु जी के तीर्थ स्थल पर आने का अवसर प्राप्त हुआ। मेरे पति श्री नर्वदेश्वरदयाल जी श्रीवास्तव भोपाल के निवासी थे। वे बहुत अस्वस्थ थे। मैंने सभी जगह अच्छा से अच्छा इलाज कराया परन्तु कहीं भी पूर्ण रूप से स्वस्थ होते नहीं दिखाई दिये। किसी अदृश्य शक्ति ने हम लोगों को लखनऊ जाने की प्रेरणा दी और हम लोगों ने लखनऊ जाने का एका एक प्रोगाम बनाया। यद्यपि इस प्रवास में कई बाधायें आईं परन्तु अदृश्य शक्ति प्रबल थी। मैं अपने ज्येष्ठ पुत्र तथा अपने छोटे भाई के साथ अपने पति को लेकर लखनऊ पहुंची। श्री गुरु जी के मन्दिर से संलग्न कक्ष में मैं अपने पति के साथ रही। गुरु की कृपा से मुझे ऐसा लगता था कि मेरे पति यहां ठीक हो जायेंगे। मेरे पति पुनीत

गुणों को आत्मसात किये हुए थे। इसी कारण ऐसा लगता था मानो गुरु जी को मेरे पति भा गये हैं। और वे मेरे पति के मानव शरीर में प्रविष्ट हो गये हैं। मैं जब भी अपने पति की मुखाकृति पर दृष्टि डालती तो वे साक्षात् गुरु जी की प्रतिमा सदृश्य दिखाई देने लगते। मैं उनसे कहती कि आप गुरु जी जैसे दिखाई देते हैं। मेरे ज्येष्ठ पुत्र ने शनिवार की रात्रि के समय आरती के समापन पर अपने पिता श्री के शरीर कष्ट से दुखी होकर एक चिट्ठी गुरु जी के चरणों में प्रेषत की "चच्चा जी मेरे डैडी जी के कष्टों का निवारण कीजिये।" गुरु जी ने मानों प्रार्थना स्वीकार करली। दूसरे दिन प्रातः १० बजकर ३० मिनट पर एकाएक उनके हृदय की गति रुक गई। वे गुरु जी में समा गये।

मुझे आज भी गुरु जी की मूर्ति की मुखाकृति के साथ अपने पति की मुखाकृति की झलक दिखाई देती है।

"मैं सदाचार आश्रम" में मन्दिर में प्रतिष्ठित गुरु जी की प्रतिमा को शत् शत् नमस्कार करती हूं। यही स्थान मेरे पूज्यनीय पति का अन्तर्ध्यान स्थल है। मेरी अन्तिम इच्छा है कि मुझे भी गुरु जी मेरे पति के समीप छोटा सा स्थान दे दें। हम दोनों गुरु जी की सेवा में साथ-साथ रह सकें। मेरे पति देव का कैसा परम सौभाग्य है कि वह परमसंत समर्थ सदगुरु के समक्ष निर्वाण प्राप्त हुए और उनके दिव्य प्रकाश में लीन हुए। यह गुरु जी की विशेष दया और कृपा ही थी कि उन्होंने मेरे पति देव को अन्तिम समय में अपनी शरण में बुला लिया और उद्धार किया।

❀❀❀

श्री भगवती शरण दास

पर ब्रह्म कहते हैं जिसे निरुपाधि जो निष्काम है।
जिसमें क्रियादिक हैं नहीं जो निर्विकार अनाम है॥

सत् रूप चिति में व्याप्त जो आनन्द घन अविकार है।
अति शान्त निर्मल है निरंजन सृष्टि का आधार है॥

निज भावना अनुकूल सब उसका स्वरूप बखानते।
अज्ञात ही है वह उसे हम सब नहीं पहिचानते॥

हर ज्ञान उसकी खोज में अज्ञान, मैं ना खो गया।
विज्ञान भी बढ़ता गया पर मार्ग में ही सो गया॥

नानात्व का अद्भुत समन्वय है यहाँ संसार में।
मत भिन्न हैं सब के सभी हैं भिन्न निज व्यापार में॥

मूला प्रकृति ही सृष्टि रचना हेतु हैं, जगदम्ब है।
साम्राज्य उसका है यहाँ वह ब्रह्म की भी अम्ब है॥

इस शृंखला में ही लिया जगदम्ब ने अवतार था।
शिव शक्ति राधा रूप में उनका हुआ व्यापार था॥

उनके पवित्र चरित्र का यश-गान करने जा रहा।
भागीरथी गंगा नई मैं हूँ धरा पर ला रहा॥

है यह कथा मधु वर्षिणी भय हारिणी भव तारिणी।
सुर असुर दोनों के हृदय सानन्द नित्य विहारिणी॥

रस सिक्त अति मधुरा कथा मन मोहने में दक्ष है।
श्रद्धा सुधा सम्भूत यह आनन्द घन प्रत्यक्ष है॥

जगदम्बिका कल कीर्ति की पावन पताका है यही।
दृग दोषा हर अन्जन भरी अद्भुत शलाका है यही॥

जिसकी कथा भागीरथी उतरी धरा पर आ रही।
वह अक्षरों से है सुधा झरती महा छवि छा रही॥

सद्-वंश में ले जन्म उसने पितृ कुल पावन किया।
सद्-वंश में श्वसुराल आ प्रति लोक को चमका दिया॥

पति भक्ति से ले शक्ति निज व्यक्तित्व में ढाला उसे।
जो पुत्र बन आया शरण अति चाव से पाला उसे॥

अपने पवित्र चरित्र से भू लोक को पावन किया॥
संसार को सुख सार स्वर्गागार नन्दन वन किया॥

सान्निध्य उनका शान्ति की शुभ सम्पदा देता रहा।
शरणा गतों की नाव को भव सिन्धु से खेता रहा॥

सामान्य जन के हेतु भी वे मूर्ति थीं कल्याण की।
पादाब्ज रज से थी प्रवहमाना नदी निर्वाण की॥

भगवान शंकर से प्रथम जिनका स्मरण जाता किया।
वामाङ्क में जिनको सदा शिव ने सदा आसन दिया॥

जिनके यथार्थ स्वरूप को देखा न जा सकता कहा।
ब्रह्माण्ड में जो व्याप्त है आलोक पूरित है महा॥

सर्वत्र सब में जो भरा जो है अरुप अनाम है।
पर ब्रह्म सब कहते जिसे जो पूर्ण मंगल धाम है॥

जगदम्ब का निज रूप उसमें लीन उसका अंग है।
उस देव का ही इस कथा में इस प्रकार प्रसंग है॥

विख्यात जितनी शक्तियाँ माँ में सभी साकार हैं।
पूजा तथा पूज्या स्वयं जगदम्बिका अविकार हैं॥

आराधना की मूल राधा नाम से विख्यात हैं।
सर्वत्र सर्वाधार हैं पुण्य-प्रभाली प्रात हैं॥

उनका भजन भगवान शंकर के भजन का भाव है।
उनका यजन, भगवान के सन्तोष का उद्भाव है॥

उनका न कोई रूप है, प्रति रूप में वे व्याप्त हैं।
जिस भाव में जो पूजता उसको उसी में प्राप्त हैं॥

श्रुतियाँ सदैव समोद उनकी ही सुकीर्ति बखानतीं।
आराधना की मूल शूल विनाशिनी अनुमानतीं॥

उनके यथार्थ स्वरूप को जो जानता पहिचानता।
होता कृतार्थ यथार्थ पाता जो उन्हें है मानता॥

इतिश्री शंकर-स्मारिका

[स्मारिका का अन्तिम पृष्ठ]

परमसंत समर्थ सद्गुरुदेव श्री श्री चच्चा जी महाराज के जन्मशती समारोह के इस पावन पर्व पर मैं इस समारोह के संरक्षक एवं आयोजकों तथा स्मारिका के प्रकाशक, संपादक एवं लेखकों को हार्दिक बधाइयां देता हूँ। जिस उत्साह, उल्लास, हर्ष और भाव व प्रेम सहित यह आयोजन मनाया जा रहा है तथा स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है, वह सर्वथा स्तुत्य एवं सराहनीय है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई और सुखद संतोष भी कि संरक्षक प्रिय श्री कृष्णदयाल जो ने अपनी गंभीर अस्वस्थता तथा असमर्थता के बावजूद स्मारिका के एक-एक शब्द को पढ़ा और प्रकाश्य सामग्री को सुरुचिपूर्ण तथा प्रेरणाप्रद बनाने में दिन-रात एक किया है।

मैंने उन महामानव के दर्शन किये हैं, उनका आंतरिक अभ्यास किया है, सत्संग लाभ उठाया है, दीक्षा ली है तथा संकट के समय उनकी विशेष दया व कृपा को प्रत्यक्ष देखा है। प्रथम दर्शन के समय जिस भाव व प्रेम से उन्होंने मुझे हृदय से लगाया, उस दिव्य अनुभूति को मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। मुझे यह स्मरण कर गर्व है कि श्रीश्री चच्चाजी महाराज को हमारे पूज्य पिताश्री ने पढ़ाया था तथा श्रीश्री चच्चाजी उनका आध्यात्मिक तर्पण किया करते थे।

मैं उनके प्रति इस शुभ अवसर पर अपनी विनम्र श्रद्धा निवेदित करता हूँ और अपने लिए ही नहीं जनजन के लिए उनके आशीर्वाद की कामना करता हूँ उन परम समर्थ सिद्ध महापुरुष की दया व कृपा से सबका कल्याण हो।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत।

– ब्रह्मलीन गुरुकृपाकांक्षी,
लल्लूराम द्विवेदी
(भू० पू० अध्यक्ष, जिला परिषद जालौन)

प्रार्थना

○

हे भगवान! हमारे बड़े से बड़े नेता से लेकर छोटे से छोटे सभी नेताओं को एवं बड़े से बड़े कर्मचारी से लेकर छोटे से छोटे सभी कर्मचारियों को सुमति और सद्बुद्धि दे।

○

हे भगवान! सारे संसार का वायु-मण्डल शुद्ध पवित्र एवं सुख और शान्ति देने वाला हो।

○

हे भगवान! आप सर्वशक्तिमान हैं। आपकी दया व कृपा से ऐसा ही हो, ऐसा ही हो, ऐसा ही हो।

ॐ शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

—(०)—

मुद्रक : आर० एस० प्रिण्टर्स, उरई